महासती श्री कुसुमवती जी महाराज का साहित्यः एक समीक्षात्मक चिन्तन

—उपप्रवर्तक श्री राजेन्द्रमुनि

पूजनीया महासती श्री कुसुमवती जी महा. के कुसुमवत् जीवन की झांकी विस्तारपूर्वक पिछले पृष्ठों में आ चुकी है। उस विषय में अथवा उनके जीवन की विशेषताओं पर पुनः लिखकर विषय की पुनरावृत्ति ही करना है। यहाँ हमारा मूल उद्देश्य महासती जी के कृतित्व पर विचार करना है। महासती श्री कुसुमवती जी म. सा. मौन साधिका हैं। वे प्रचार-प्रसार से तो दूर रहती ही हैं। उन्होंने स्वरचित साहित्य का अद्यावधि प्रकाशन भी नहीं करवाया है। आज तक उनके द्वारा रचित कुछ भजन स्तवन ही प्रकाशित हुए हैं। वे भी सार्वजनिक लाभ की दृष्टि से ध्यान में रखकर प्रकाशित करवाए गए हैं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं लगाया जाए कि उनमें लेखकीय क्षमता नहीं है। महासती जी ने प्रवचन, कहानी, निबन्ध साहित्य का सृजन तो किया ही साथ ही उन्होंने समय-समय पर अपने मानस पटल पर उभरने वाले चिन्तन को भी सहेज कर रखा है। इसी प्रकार वे अध्ययन अध्यापन में विशेष रुचि रखती हैं। यही कारण है कि उनकी शिष्याएँ प्रशिष्याएँ उच्च योग्यता प्राप्त हैं। महासती जी के इसी कृतित्व पक्ष पर यहां विचार किया जाएगा।

प्रवचन

प्रवचन गद्य साहित्य की एक विशिष्ट विधा है। साधारण वाणी या कथन वचन कहा जाता है। परन्तु सन्तों, विचारकों एवं आध्यात्मिक अनुभवियों का प्रकृष्ट कथन 'प्रवचन' है। प्रवचन में आत्मा का स्पर्श, साधना का तेज और जीवन का सत्य परिलक्षित होता है। उसका प्रभाव तीर सी वेधकता लिए होता है। उसमें प्रयुक्त शब्द, मात्र शब्द नहीं होते, वे जीवन की गहराइयों और अनुभवों की ऊँचाइयों का अर्थ लिए होते हैं। बृहत्कल्प भाष्य में कहा है—

गुणसुट्ठियस्स वयणं घयपरिसित्तुव्व पावओ भवइ।
गुणहीणस्स न सोहइ नेहविहूणो जह पईवो॥

अर्थात् गुणवान् व्यक्ति का वचन घृत-सिंचित अग्नि की तरह ओजस्वी एवं पथ प्रदर्शक होता है। जबकि गुणहीन व्यक्ति का वचन स्नेह रहित (तेल शून्य) दीपक की भाँति निस्तेज और अन्धकार से परिपूर्ण होता है।

परम विदुषी महासती श्री कुसुमवती जी म. सा. एक सफल प्रवचन लेखिका हैं। अपने सुदीर्घ तितिक्षु जीवन में एक ओर जहां शास्त्रों का गहन अध्ययन किया है, वहीं समाज में व्याप्त रूढ़ियाँ, अन्धविश्वास और परम्पराओं को भी निकट से देखा है। कुछ अन्धविश्वासों और रूढ़ियों को देखकर तो आपका कोमल हृदय द्रवित हो उठता है तब आप अपने प्रवचन में सटीक चोट करती हैं। जिस समय आप सैद्धान्तिक प्रवचन फरमाती हैं तब आपका तलस्पर्शी ज्ञान दृष्टिगोचर होता है। अपने कथन को आप शास्त्रीय गाथाओं, उदाहरणों से पुष्ट करती हैं और विभिन्न दृष्टान्तों से उसे सर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सता व स्पष्टता प्रदान करती हैं। आपके प्रवचन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आप मूल विषय से भिन्न विचार प्रकट नहीं करती हैं। मूल विषयों से सम्बन्धित उद्धरण और दृष्टान्त ही प्रकट करती है। आपकी प्रवचनकला से श्रोता ऊब का अनुभव नहीं करते, वरन वे उसमें डूब से जाते हैं, आत्म विभोर हो जाते हैं।

आपके प्रवचनों से दुष्प्रवृत्तियां समाप्त होती हैं और सद्प्रवृतियों का पोषण होता है। श्रोताओं में जागृति की एक लहर उत्पन्न होती है। आपकी प्रवचन शैली उच्चकोटि की कही जा सकती है। कब, क्या और कैसे भाव व्यक्त करना, यह आप अच्छी तरह से जानती हैं। आप इस तथ्य से भी अच्छी प्रकार परिचित हैं कि लोगों पर कोई भी बात जबरन थोपी नहीं जा सकती है। इसलिए आप श्रोताओं की मनोदशा के अनुरूप प्रवचन देती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि आपके प्रवचन प्रभावी होते हैं और लोग उनके अनुरूप अपना कार्य एवं व्यवहार रखने का प्रयास करते हैं।

आपके प्रवचनों के विषय वैसे तो जैनधर्मानुसार होते हैं किन्तु समय समय पर आप समाज सुधार विषयक भी लिखती हैं।

आपके प्रवचनों की भाषा सरल, सहज, सरस और बोधगम्य है। जनता को जनता की भाषा में कहना आप अच्छी प्रकार जानती हैं, यही कारण है कि आपके प्रवचनों में लोक भाषा की शब्दावली भी खूब मिलती है। कहावतों, लोकोक्तियों, मुहावरों का भी यथास्थान स्वाभाविक रूप से प्रयोग हुआ है।

आपके अनेक प्रवचन लिखे हुए हैं जो अप्रकाशित हैं, आशा है शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। आपके कुछ प्रवचन उदाहरण स्वरूप पिछले पृष्ठों में दिये जा चुके हैं। पाठक उन्हें पढ़कर आपकी प्रवचनकला से परिचित होंगे ही।

कहानी

जहाँ एक ओर आप सफल प्रवचनकर्त्री हैं वहीं दूसरी ओर आप मधुर भाषा शैली में कहानी की रचना भी करती हैं। कहानी गद्य विधा की एक सशक्त अभिव्यक्ति है। मनुष्य जो कुछ देखता है, भोगता है वह दूसरे को बताना चाहता है। कहना चाहता है। अभिव्यक्त करना चाहता है। यह मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है और इसी प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप कहानी को जन्म मिला। इस आप बीती में कथा या कहानी के अनेक अंश उभरे। दूसरे शब्दों में हम इसे कहानी के प्रकार अथवा भेद कह सकते हैं।

कथा की उत्पत्ति कथ् धातु से हुई है और विद्वानों ने इसकी परिभाषा अपने अपने ढंग से की है। सामान्यतः तो गद्यात्मक शैली में लिखी गई लघुकथा को कहानी कहते हैं। एक पाश्चात्य विद्वान ने कहानी की परिभाषा करते हुए लिखा है—'कहानी' एक ऐसा गद्यात्मक आख्यान है जो आध घंटे से लेकर दो घण्टे तक के समय में एक ही बैठक में समाप्त हो जाए और पाठक के हृदय में संवेदना उत्पन्न कर सके। एक अन्य विद्वान के अनुसार 'एक छोटी कहानी ऐसी कहानी हो जिसमें साधारण घटनाओं और आकस्मिक दुर्घटनाओं का अंकन हो। कथावस्तु गतिशील हो और अप्रत्याशित एवं असम्भव चरम विकास में उसकी समाप्ति हो।'

डा० श्यामसुन्दर दास ने कहानी में नाटकीयता पर बल दिया और प्रेमचन्द ने कहानी को एक ऐसी रचना माना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है।

उपर्युक्त विविध परिभाषाओं को देखने से हमें 'कहानी' क्या है ? समझ में आ जाता है। कहानी के रूप भी कई मिलते हैं। घटनाप्रधान, चरित्रप्रधान, वातावरणप्रधान एवं भावप्रधान कहानियाँ होती हैं। किन्तु लम्बी कहानी, लघुकथा, रूपककथा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बोधकथा धर्मकथा आदि भी उसके रूप होते हैं। इन रूपों की सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं। इनमें से कुछ प्रकार की कहानियों में कहानी कला के समस्त तत्वों की पूर्ति न होते हुए भी वे अपने आप में पूर्ण हैं।

बाल ब्रह्मचारिणी महासती श्री कुसुमवती जी म. सा. को कथा साहित्य का लघुकोश कहा जा सकता है। लघुकथाओं के अतिरिक्त आपने महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग भी सुन्दर, सरस भाषा-शैली में लिखे हैं। ये जीवन प्रसंग न केवल रुचिकर हैं वरन् अनुकरणीय भी हैं। ये प्रसंग मर्मस्पर्शी हैं जो जीवन को दिशादान देने में समर्थ हैं।

कुछ लघुकथाओं आदि का प्रकाशन इस ग्रंथ में किया जा रहा है। जिससे पाठक वर्ग आपकी कहानी कला से भी परिचित हो सकें। वैसे महासती जी प्राचीन श्रुत परम्परानुसार अपना साहित्य प्रकाशित न करवा कर अपनी शिष्याओं को कंठस्थ करवाती हैं किन्तु प्राचीन युग के समान बौद्धिक विशेषताएँ अब हैं नहीं। फिर अब अपने कथ्य को सुरक्षित रखने के अनेक माध्यम/उपाय आज विद्यमान हैं। इसीलिए महासती जी के समस्त कथा साहित्य का प्रकाशन जन-जन के लाभार्थ होना चाहिए।

आपके कथा साहित्य में जितनी भी लघुकथाएँ, बोधकथाएँ प्रेरक, प्रसंग आदि हैं वे सभी अनुकरणीय हैं। उनसे नैतिक शिक्षाएँ ग्रहण की जा सकती हैं, व्यक्ति के चारित्रक विकास में वे काफी सहायक बन सकती हैं। भाषा प्रांजल है और शैली मिश्रित है किन्तु उनमें रोचकता है, सरसता है और श्रोताओं को बांधे रखने की क्षमता है।

निबन्ध—प्रवचन और कहानी के अलावा आपने अनेक चिन्तनप्रधान निबन्ध भी लिखे हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध को गद्य की कसौटी कहा है। निबन्ध में अनुभूति की अभिव्यक्ति सशक्त होती है और लेखक का पूर्ण व्यक्तित्व निखरता है।

निबन्ध का अर्थ बांधना है--निबन्ध वह है जिसमें विशेष रूप से बंध या संगठन हो। जिसमें विविध प्रकार के विचारों/मतों/व्याख्याओं का सम्मिश्रण हो या गुम्फन हो। वर्तमान युग में निबन्ध उस गद्य रचना को कहा जाता है जिसमें परिमित आकार के अन्दर किसी विषय विशेष का वर्णन अथवा प्रतिपादन अपने निजपन, स्वतन्त्रता सौष्ठव, सजीवता आवश्यक संगति और सभ्यता के साथ किया गया हो। स्वाभाविक रूप से अपने भावों को प्रगट कर देना निबन्धकार की सफलता होती है।

भावात्मक और विचारात्मक ये दो प्रकार निबन्धों के बताये गये हैं। इनके अतिरिक्त कहीं-कहीं निबन्धों के कुछ अन्य प्रकार भी बताये जाते हैं, किन्तु इन दोनों के अन्तर्गत सभी समाहित हो जाते हैं।

भावात्मक निबन्ध में लेखक किसी वस्तु का विवेचन अपनी बुद्धि और तर्कशक्ति से नहीं करता, अपितु हृदय की भावनाओं को सरस अनुभूतियों के रंग में रंगकर इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि उसे पढ़ते-पढ़ते प्रबुद्ध पाठकों के हृदयतन्त्री के तार झनझना उठते हैं। विचारात्मक निबन्धों में चिन्तन, विवेचन और तर्क का प्राधान्य होता है। विचारात्मक निबन्धों में निबन्धकार के व्यक्तिगत दृष्टिकोण से किसी एक वस्तु की तर्कपूर्ण और चिन्तनशील अनुभूति की गहन अभिव्यक्ति होती है। स्मरणीय है कि सामान्य लेख और निबन्ध में काफी अन्तर है। सामान्य लेख में लेखक का व्यक्तित्व प्रच्छन्न रहता है। जबकि निबन्ध में निबन्धकार का व्यक्तित्व ऊपर उभरकर आता है।

बाल ब्रह्मचारिणी परम विदुषी महासती श्री कुसुमवती जी म. सा. द्वारा लिखित निबन्धों में दोनों ही प्रकार के निबन्ध मिलते हैं। आपके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निबन्धों में विवेचनात्मक और गवेषणात्मक ये दोनों ही प्रकार की विधाएं सम्मिलित हैं। आपके निबन्धों की भाषा प्रांजल है, प्रवाह उत्तम है। सामान्य पाठक वर्ग के लिए सरल, सरस एवं बोधगम्य है, जहाँ कहीं भी आपने संस्कृत/प्राकृत की गाथाओं को उद्धृत किया है। वहाँ आपने उसे विस्तार से समझाया भी है। इससे पाठकों को आपके निबन्धों के कथ्य को समझने में सुविधा हुई है।

चूंकि आप जैन धर्म की एक परम विदुषी महासती हैं, इसलिए आपके निबन्धों के विषय भी उसके अनुरूप ही हैं। निबन्धों में सामान्यतः उपदेश परक शैली का उपयोग किया गया है। आपके निबन्धों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि आपका अध्ययन विस्तृत है, चिन्तन गम्भीर है। विषय को गहराई से उद्धरणों और दृष्टान्तों सहित प्रस्तुत कर विषय वस्तु का समुचित रीत्यानुसार प्रतिपादन करने में आप सर्वथा सक्षम हैं।

चिन्तन सूत्र

चिन्तन करना मानव का स्वाभाविक गुण है। वह जितना अध्ययन में डूबकर उस पर विचार करता है, नये-नये विचार उत्पन्न होते जाते हैं जो कभी-कभी एक-एक पंक्ति से आठ या दस पंक्ति तक के हो सकते हैं। कभी-कभी विचार करते-करते भी मानस पटल पर प्रकाश पुंज की भांति विचारों का आविर्भाव होता है। कभी व्यक्ति भ्रमण करता होता है, कोई घटना देखता है और उसके मस्तिष्क में नवीन विचारों का आविर्भाव हो जाता है, यह बात तो सामान्य व्यक्ति की है।

जब कोई साधक अपनी साधना में लीन होता है/ध्यान मग्न होता है तो उसके मानस-पटल पर असंख्य दृश्य/विचार आते रहते हैं। वे विचार ही उनके चिन्तन का सार होते हैं। यहाँ यह स्मरणीय हैं कि प्राचीन संस्कृत प्राकृत साहित्य जो ऋषि-मुनियों की देन है, इसी चिन्तन का परिणाम है। वस्तुस्थिति यह है कि इस चिन्तन में नये विचार मिलते हैं, जिसे हम ज्ञान प्राप्ति की संज्ञा भी दे सकते हैं।

वर्तमान काल में भी यह चिन्तन की प्रक्रिया चल रही है। आज का साहित्यकार समाज को नये-नये विचार दे रहा है। यह विचार सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित हो सकते हैं। किन्तु जो सन्त होता है, साधक होता है, उसके चिन्तन का क्षेत्र आध्यात्मिक होता है, जो अपने चिन्तन के फल-स्वरूप आध्यात्मिक या दार्शनिक विचार सूत्र जन-मानस को देता है।

परम विदुषी महासती श्री कुसुमवती जी महाराज भी एक साधिका हैं। अध्ययन के साथ उनका चिन्तन भी सतत चलता रहता है। जिसके परिणामस्वरूप उनके मानस-पटल पर नये-नये विचार उत्पन्न होते रहते हैं। ये विचार-कण या चिन्तन सूत्र सामान्यतः आध्यात्मिक होते हैं, किन्तु कहीं-कहीं सामाजिक चिन्तन भी प्रकट हुआ है। समाज में रहते हुए वे जो देखती हैं उस पर भी स्वाभाविक चिन्तन हो जाता है और जो नयी अनुभूति होती है/विचार उत्पन्न होते हैं, वे चिन्तन कण का स्वरूप ले लेते हैं। आपके इन विचार सूत्रों में नया संदेश मिलता है। कुछ सूत्र तो ऐसे हैं, जिन पर विस्तार से बहुत कुछ लिखा जा सकता है। इन सूत्रों में दार्शनिकता के साथ सामाजिकता भी पायी जाती है। सैद्धान्तिक विचारों के साथ कुछ व्यावहारिक दर्शन भी मिलता है। आपके समस्त विचार सूत्रों का प्रकाशन अनुकरणीय प्रतीत होता है। इस दिशा में आवश्यक प्रयत्न जरूरी है।

भजन-स्तवन

अपने आराध्य के स्मरणार्थ कुछ काव्य पंक्तियों की रचना की जाती है, जिसे विधा के अनुसार भजन या स्तवन/स्तुति आदि कहा जाता है। प्राचीन भजन या स्तवन/स्तुतियां/स्तोत्र पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। इन भजन स्तुतियों की विशेषता उनकी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय वस्तु में तो है ही, किन्तु एक सबसे बड़ी विशेषता उनकी गेयता है।

'स्तुति' शब्द स्तुत्यर्थक 'स्तु' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय लगकर बनता है। जिसका अर्थ है—श्रद्धा भक्तिपूर्वक पूज्य गुणों का वर्णन करना। पाश्चात्य विद्वान हिम (Hymn) शब्द का प्रयोग स्तुति के अर्थ में करते हैं।

जैन परम्परा में स्तुति का अत्यधिक महत्व है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और समस्त प्रान्तीय भाषाओं में अगणित स्तुतियाँ मिलती हैं। जैन धर्म में स्तुति के अर्थ में 'स्तव' और 'स्तोत्र' इन दो शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। प्राकृत भाषा में स्तव को 'थय' या 'थअ' तथा स्तोत्र की 'थोत्त' कहा गया है।

परम विदुषी महासती श्री कुसुमवती जी म० सा० ने समय-समय पर विभिन्न स्तुतियों की संरचना की है। जो प्रांजल भाषा में सरल, सरस और गेय हैं। कवयित्री ने जहाँ स्तुतिपरक भजनों में आराध्यदेव प्रभु के प्रति श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाया है, भक्ति भाव के सुगन्धित सुमनों को समर्पित किया है। वहीं उपदेशपरक भजनों की भी संरचना की है। इन उपदेशपरक भजनों के द्वारा मानवों की सुप्त चेतना को जगाने हेतु भावपूर्ण शब्दों में हितोपदेश दिया है। इसी खण्ड में उनके कुछ भजन अंकित हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि परम विदुषी महासती श्री कुसुमवती जी महाराज एक निबन्धकार, प्रवचनकर्त्री, कथाकार, चिन्तक और कवयित्री के रूप में हमारे सम्मुख आती हैं। उनके द्वारा रचित साहित्य का अवलोकन करने से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने जो भी सृजन किया है। वे उस विधा में खरी उतरी है। यहाँ मैं इस बात का निर्देश करना आवश्यक समझता हूँ कि उनकी शिष्याओं/प्रशिष्याओं को चाहिए कि वे महासती जी द्वारा रचित समस्त साहित्य को व्यवस्थित कर उसे अलग-अलग पुस्तकों में प्रकाशित करवायें तो जन सामान्य को भी उसका लाभ मिल सकेगा और उनके बताये मार्ग पर चलने का प्रयास कर सकेगा। विश्वास है कि मेरे इस सुझाव को क्रियात्मक रूप मिलेगा।

(शेष पृष्ठ ५१४ का)

प्रसन्नता शीतल जल पूरित स्वच्छ जलाशय है, जिसमें निमग्न होकर प्रत्येक निर्मल तो हो ही जाता है, समस्त तापों से भी मुक्त हो जाता है।

आभ्यन्तरिक प्रसन्नता ही सारे जगत को किसी के लिए भव्य सौन्दर्यशाली, चित्ताकर्षक और मनोरम बना देती है। हम जिस रंग का चश्मा चढ़ाएंगे उसी रंग में रंगे हुए तो सारे दृश्य हमें दिखाई देंगे।

प्रसन्नता मन का तत्व है। इसे प्रसन्नता देने वाली बाह्य वस्तु की विशेषता मानना भ्रम है।

प्रसन्नता जीवन और जगत के दुर्धर्ष संकटों से संघर्ष की प्रथम एवं अनिवार्य तैयारी है, जो उत्साह के आयुध-निर्माण का कार्य करती है।

आशा-निराशा

उत्साह यौवन का अनिवार्य लक्षण है। उसका जीवन है—आशा। निराशा यौवन की मौत है। आशा की ओर उन्मुख रहना उत्साह की चाह और यौवन की राह है।

आशा भरे हृदय को कोई संकट कभी आतंकित नहीं कर पाता और उसकी यह असमर्थता पराभव की प्रथम सीढ़ी बनती है।

आशा व्यक्ति के लिए कभी दुखद नहीं होती है। आशाओं की अपूर्ति तो निराशा है, वही खेदजनक है। उसे आशा मानना भ्रान्ति है। आशाएँ इस प्रकार निराशाओं में तभी परिणत होती हैं, जब व्यक्ति उसके लिए अतीव काल्पनिक आधार बनाता है—आशा का क्या दोष ?

सावधानी के साथ आशाओं को क्षेत्र दो, उद्यम से सींचो, सचेष्टता से संरक्षण करो, यत्न से विकसित करो, प्रसन्नता के ही प्रसून प्रस्फुटित होंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org